सिद्ध साहित्य

डॉ. कृष्ण कुमार पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग
राम चरित्र सिंह महाविद्यालय
मंझौल, बेगुसराय
सम्पर्क : ksoni.hindi@gmail.com

आदिकालीन धार्मिक साहित्य में प्राय: दो प्रकार का साहित्य है। बौद्ध धर्म से प्रभावित साहित्य तथा जैन धर्म से प्रभावित साहित्य। बौद्ध धर्म से प्रभावित साहित्य की दो धाराएं हैं- सिद्ध साहित्य और नाथ साहित्य।

क) सिद्ध साहित्य :

सिद्ध परंपरा बौद्ध धर्म की परंपरा से प्रभावित एक धार्मिक आंदोलन है। बौद्ध धर्म हीनयान व महायान दो शाखाओं में विभक्त हो गया था। महायान में आगे चलकर तांत्रिक क्रियाओं, मंत्रों द्वारा सिद्धि चाहने वाले वाममार्गी सिद्ध कहलाए।

राहुल सांकृत्यायन व आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने इनकी संख्या **84** बताई है। अभी तक केवल **14** सिद्धों की रचनाएं उपलब्ध हैं। सरहपा, शबरपा, लुईपा, कण्हपा आदि प्रमुख सिद्ध कहलाए।

सिद्धों ने साहित्य की रचना अपने संप्रदाय के विचारों को आम लोगों तक पहुँचाने के उद्देश्य से की। अत: उनकी अभिव्यक्ति सरल व स्वाभविक है उनमें साहित्य की सूक्ष्मताएं दृष्टिगोचर नहीं होती। सिद्ध साहित्य में स्वाभाविक सुख भोगों को स्वीकार किया गया है। इन्होंने गृहस्थ जीवन में ही रहकर निर्वाण प्राप्ति को सहज बताया। सिद्ध साहित्य में शारीरिक-साधना पर बल दिया गया और शरीर में रहने वाले परमात्मा को प्राप्त करवाने में गुरु को विशेष महत्वपूर्ण बताया। सिद्धों ने वैदिक अनुष्ठानों, धार्मिक कर्मकांडों व सामाजिक विषमताओं का विराध किया। सरहपा की एक उक्ति का उदाहरण उल्लखनीय है-

'पंडिअ सअल सत्य वक्खाणअ।

देहहि बुद्ध बसन्त ण जाणअ।।' - सरहपा

(अर्थात् पंडित सभी शास्त्रों का बखान करते हैं पर शरीर में बसने वाले शुद्ध ब्रह्म को नहीं जानते।)

सिद्धों का उपदेशात्मक साहित्य मुक्तक में लिखा गया है जो विशेषत: 'दोहाकोष' व 'चर्यापद' के रूप में संकलित है। इन्होंने नए-नए छन्दों की सृष्टि की जिनमें दोहा, चौपाई, सोरठा, छप्पय आदि हैं। इनकी भाषा को संधा भाषा कहा जाता है। इन्होंने अपनी अन्त: साध्नात्मक अनुभूतियों को अभिव्यक्ति हेतु काव्य रचना की इसलिए इनके काव्य में संध्या, धुंधलापन दिखाई देता है। वैसे इनकी भाषा अर्द्धमागधी अपभ्रंश के निकट की भाषा थी। भाषा में प्रतीकात्माकता व अक्खड़पन झलकता है।

(समाप्त)